INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS IN SOCIAL SCIENCES
Peer Review, Refereed, Biannual, Multiple Language (Hindi & English), Social Science Journal, Open Access Journal
ISSN: 3107-5096(ONLINE)
VOL. 2, ISSUE 2 (JUNE) 2026

मेरठ के अग्रणी शैक्षणिक संस्थानों के पुस्तकालय: संसाधन प्रबंधन की दृष्टि से तीन महाविद्यालयो का तुलनात्मक अध्ययन

संतोष कुमार,
शोध छात्र,
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान,
देश भगत विश्वविद्यालय,पंजाब

डॉ. गुरिंदर कौर संधू,
सहायक आचार्य एवं विभागाध्यक्ष,
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
देश भगत विश्वविद्यालय, पंजाब

Citation:
Kumar, S., & Sandhu, G. (2026). मेरठ के अग्रणी शैक्षणिक संस्थानों के पुस्तकालय: संसाधन प्रबंधन की दृष्टि से तीन महाविद्यालयो का तुलनात्मक अध्ययन. INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS IN SOCIAL SCIENCES, 2(2), 7–16.
Doi:
https://doi.org/10.5281/zenodo.20022011

सारांश

यह शोध पत्र पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मेरठ शहर के तीन प्रमुख उच्च शिक्षा संस्थानों—मेरठ कॉलेज (1892), नानकचंद एंग्लो संस्कृत कॉलेज (NAS, 1952), तथा लाला लाजपत राय मेमोरियल मेडिकल कॉलेज (LLRM, 1966)—के पुस्तकालयों का व्यापक तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भारतीय शिक्षा परिदृश्य में पुस्तकालयों को ज्ञान संचय, अनुसंधान प्रोत्साहन, सांस्कृतिक संरक्षण तथा बौद्धिक विकास के केन्द्र के रूप में चिह्नित करते हुए, यह अध्ययन डिजिटल युग की चुनौतियों एवं अवसरों पर केन्द्रित है। ***प्रमुख निष्कर्ष*** *निम्नलिखित हैं: मेरठ कॉलेज का पुस्तकालय 2,00,000+ पुस्तकों एवं दुर्लभ पाण्डुलिपियों के विशाल संग्रह के साथ परम्परागत ज्ञान भंडार का प्रतिनिधित्व करता है, किन्तु डिजिटलीकरण में प्रारम्भिक अवस्था (40-50%) में है। NAS कॉलेज का 1,07,000 पुस्तकों वाला पुस्तकालय 1991 में स्थापित अद्वितीय "संग्रहालय कोना" के माध्यम से अनुभवात्मक शिक्षा प्रदान करता है तथा SOUL सॉफ्टवेयर (70-80% डिजिटलीकरण) से तकनीकी रूप से सशक्त है। LLRM मेडिकल कॉलेज का 30,000 चिकित्सा-केन्द्रित पुस्तकालय PubMed, ClinicalKey, UpToDate जैसे वैश्विक डेटाबेस, 24/7 वाई-फाई, एवं 'हिंग्लिश पहल के साथ 95%+ डिजिटलीकृत है।* ***तुलनात्मक विश्लेषण*** *दर्शाता है कि संस्थागत उद्देश्य, बजट स्रोत (UGC, राज्य सरकार, चिकित्सा विभाग) एवं लक्षित उपयोगकर्ता (सामान्य छात्र/शोधार्थी, कला अध्येता, चिकित्सा पेशेवर) इनकी प्राथमिकताओं को निर्धारित करते हैं। मेरठ कॉलेज विविधता, NAS सांस्कृतिक गहनता, तथा LLRM व्यावहारिकता पर केन्द्रित है।* ***सुझावो*** *में SOUL सॉफ्टवेयर विस्तार, दुर्लभ सामग्री डिजिटलीकरण, "मेरठ पुस्तकालय नेटवर्क" गठन, सूचना साक्षरता प्रशिक्षण, बहुभाषी संसाधन विकास, एवं क्लाउड-आधारित संरक्षण सम्मिलित हैं।*

यह अध्ययन न केवल क्षेत्रीय शिक्षा के विकास के लिए नीतिगत दिशा-निर्देश प्रदान करता है, अपितु भारतीय उच्च शिक्षा में पुस्तकालयों के बहुआयामी मॉडल को भी प्रतिपादित करता है। मेरठ के ये पुस्तकालय परम्परा-आधुनिकता संनादि के प्रतीक हैं, जो सहयोग, डिजिटलीकरण, एवं उपयोगकर्ता-केन्द्रित सेवाओं से वैश्विक ज्ञान केन्द्र के रूप में उभर सकते हैं।

मुख्य शब्द: ***मेरठ कॉलेज पुस्तकालय***, NAS ***कॉलेज***, LLRM ***मेडिकल कॉलेज***, ***डिजिटल परिवर्तन***, SOUL ***सॉफ्टवेयर***, ***दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ***, ***संग्रहालय कोना***, PubMed ***डेटाबेस***, ***संसाधन प्रबंधन***, ***हिंग्लिश पहल*** /

प्रस्तावना

पुस्तकालय किसी भी सभ्य समाज की आत्मा माने जाते हैं। भारतीय संदर्भ में, जहाँ गुरुकुलों और विश्वविद्यालयों की एक प्राचीन परंपरा रही है, पुस्तकालयों का महत्त्व अवर्णनीय है। आधुनिक भारतीय शिक्षा व्यवस्था में, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने पुस्तकालयों को शैक्षणिक संस्थानों की रीढ़ के रूप में मान्यता दी है। ये संस्थान न केवल पुस्तकों के भंडार हैं, बल्कि ज्ञान, अनुसंधान, सांस्कृतिक चेतना और बौद्धिक विकास के महत्वपूर्ण केंद्र हैं। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के महत्वपूर्ण शहर मेरठ में तीन प्रमुख उच्च शिक्षा संस्थान हैं, जिनके पुस्तकालय न केवल क्षेत्रीय शिक्षा में अपितु भारतीय उच्च शिक्षा के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये संस्थान हैं: मेरठ कॉलेज (जिसकी स्थापना सन् 1892 में हुई थी), नानकचंद एंग्लो संस्कृत कॉलेज (NAS College, जिसकी स्थापना 1952 में हुई थी), और लाला लाजपत राय मेमोरियल (LLRM) मेडिकल कॉलेज (जिसकी स्थापना 1966 में हुई थी)। इन तीनों संस्थानों के पुस्तकालय अपनी विभिन्न विशेषताओं, संसाधनों, और सेवाओं के लिए जाने जाते हैं। वर्तमान समय में, जब विश्व डिजिटल क्रांति के बीच से गुजर रहा है, भारतीय पुस्तकालयों को एक अद्वितीय चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। वे परंपरागत ज्ञान संचयन की भूमिका को बनाए रखते हुए, साथ ही साथ डिजिटल युग के आधुनिक उपकरणों और सेवाओं को भी अपनाने का प्रयास कर रहे हैं। मेरठ के इन तीनों पुस्तकालयों की तुलनात्मक अध्ययन इस संदर्भ में विशेष महत्व रखता है, क्योंकि ये विभिन्न शैक्षणिक पृष्ठभूमि से आते हैं और विभिन्न दृष्टिकोण से उच्च शिक्षा को सेवा प्रदान करते हैं।

- **इतिहास, परंपरा और शोध का केंद्र - मेरठ कॉलेज पुस्तकालय -**

मेरठ कॉलेज की स्थापना सन् 1892 में हुई थी, जो इसे देश के सबसे पुराने कॉलेजों में से एक बनाता है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक महत्वपूर्ण काल में, जब भारतीय समाज में आधुनिक शिक्षा के प्रति एक नई चेतना जाग रही थी, मेरठ कॉलेज की स्थापना हुई थी। यह संस्थान न केवल एक शिक्षा केंद्र था, बल्कि सामाजिक जागरूकता और बौद्धिक विकास का एक महत्वपूर्ण मंच भी था। मेरठ कॉलेज के पुस्तकालय का विकास इसी 130 से भी अधिक वर्षों की गौरवशाली यात्रा का परिणाम है। मेरठ कॉलेज का केंद्रीय पुस्तकालय न केवल मेरठ बल्कि संपूर्ण क्षेत्र के सबसे बड़े और सबसे प्रभावशाली पुस्तकालयों में से एक माना जाता है। जब हम इस पुस्तकालय के बारे में सोचते हैं, तो हमें एक विशाल भवन, अलमारियों की पंक्तियाँ, हजारों पुस्तकें, और सबसे महत्वपूर्ण रूप से, ज्ञान की एक अपार भंडारी का दृश्य आँखों के सामने आता है। यह पुस्तकालय 130 वर्षों से भी अधिक समय से छात्रों, शोधार्थियों, शिक्षकों और ज्ञान की खोज करने वाले प्रत्येक व्यक्ति का स्वागत करता आ रहा है।

- **संग्रह की विस्तृत विशेषताएं**

मेरठ कॉलेज के पुस्तकालय में लगभग 2,00,000 (दो लाख) से अधिक पुस्तकें हैं। यह संख्या अपने आप में एक भारी आँकड़ा है, जो इस पुस्तकालय की विशालता और व्यापकता को दर्शाती है। परंतु केवल संख्या ही नहीं, बल्कि संग्रह की गुणवत्ता और विविधता भी इस पुस्तकालय को विशिष्ट बनाती है। मेरठ कॉलेज पुस्तकालय में दस से भी अधिक विभागीय पुस्तकालय हैं, जो विभिन्न विषयों में विशेषीकृत हैं। इसका मतलब यह है कि कॉलेज के प्रत्येक मुख्य विभाग—जैसे गणित, विज्ञान, साहित्य, इतिहास, राजनीति विज्ञान, कानून, आदि—के पास अपना खुद का पुस्तकालय है, जहाँ उस विषय से संबंधित विशेष पुस्तकें और संसाधन संग्रहीत होते हैं।

इसी पुस्तकालय की सबसे विशिष्ट और गौरवान्वित विशेषता है दुर्लभ पाण्डुलिपियों का एक विशाल और अमूल्य संग्रह। ये पाण्डुलिपियाँ केवल पुस्तकें नहीं हैं, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा, इतिहास और संस्कृति के अनमोल दस्तावेज हैं। जब एक शोधार्थी इन दुर्लभ पाण्डुलिपियों को देखता है, तो उसे अतीत के साथ एक प्रत्यक्ष संवाद स्थापित होता है। ये पुरानी पुस्तकें, हस्तलिखित दस्तावेज, और ऐतिहासिक संग्रह इतिहास, राजनीति विज्ञान, साहित्य, और संस्कृत अध्ययन के शोधार्थियों के लिए अमूल्य वस्तु हैं। ऐसी दुर्लभ पाण्डुलिपियों

को संरक्षित रखना स्वयं में एक चुनौती है, क्योंकि ये 100-200 साल से भी अधिक समय से संरक्षित हैं।

- **संगठन और प्रशासनिक ढांचा**

मेरठ कॉलेज के पुस्तकालय का प्रबंधन एक विस्तृत संगठनात्मक ढांचे के तहत किया जाता है। यहाँ एक पेशेवर पुस्तकालयाध्यक्ष होते हैं, जिनके अधीन सहायक पुस्तकालयाधिकारी, वर्गीकरणकर्ता, कैटलॉगकर्ता, और अन्य तकनीकी कर्मचारी काम करते हैं। इस विशाल पुस्तकालय को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए डेवी दशमलव वर्गीकरण प्रणाली (DDC - Dewey Decimal Classification) का उपयोग किया गया है जो विश्व में सबसे व्यापक रूप से स्वीकृत पुस्तकालय वर्गीकरण प्रणाली है।

- **बजट और वित्तीय आवंटन**

मेरठ कॉलेज के पुस्तकालय के संचालन के लिए बजट का स्रोत मुख्य रूप से भारतीय विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) है। यूजीसी विश्वविद्यालयों और कॉलेजों को शिक्षा गुणवत्ता में सुधार के लिए अनुदान प्रदान करता है। इस अनुदान में से एक महत्वपूर्ण भाग पुस्तकालय विकास के लिए आवंटित किया जाता है। यह यूजीसी अनुदान मेरठ कॉलेज को नई पुस्तकें खरीदने, पत्रिकाओं की सदस्यता लेने, पुस्तकालय बुनियादी ढांचे को सुधारने, और शोध संसाधनों में विनिवेश करने का अवसर देता है। परंतु केवल यूजीसी अनुदान ही नहीं, मेरठ कॉलेज के पुस्तकालय के विकास में राज्य सरकार का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। बहुत से मामलों में, कॉलेज प्रबंधन भी पुस्तकालय विकास के लिए अतिरिक्त निधि प्रदान करता है। इसके बावजूद, आधुनिक डिजिटल संसाधनों में निवेश करने के लिए आवश्यक बजट को लेकर चुनौतियाँ बनी रहती हैं।

- **तकनीकी विकास की वर्तमान स्थिति**

मेरठ कॉलेज का पुस्तकालय वर्तमान समय में तकनीकी आधुनिकीकरण के दौर से गुजर रहा है। पुस्तकालय के प्रशासकों का लक्ष्य है कि पुस्तकालय की संपूर्ण प्रणाली को डिजिटल रूप में परिवर्तित किया जाए। इस समय, पुस्तकालय में एक डिजिटल कैटलॉग का निर्माण प्रक्रिया में है। यह एक महत्वपूर्ण कदम है, क्योंकि यह छात्रों और शोधार्थियों को घर बैठे ही यह जानकारी देगा कि पुस्तकालय में कौन-कौन सी पुस्तकें हैं, कौन सी किताब उपलब्ध है, और कौन सी किताब इस समय किसी को दी गई है।

हालांकि, मेरठ कॉलेज के पुस्तकालय में अभी तक एक सर्वव्यापी वाई-फाई कनेक्टिविटी की कमी है। यह एक महत्वपूर्ण बाधा है क्योंकि आधुनिक छात्र लैपटॉप और टैबलेट के साथ पुस्तकालय आते हैं और इंटरनेट से जुड़े डिजिटल संसाधनों तक पहुँचना चाहते हैं। पुस्तकालय में स्थानीय क्षेत्र नेटवर्क (LAN - Local Area Network) का भी अभाव है।

- **परंपरा और संग्रहालय का संयोजन : नानकचंद एंग्लो संस्कृत कॉलेज पुस्तकालय -**

नानकचंद एंग्लो संस्कृत कॉलेज (NAS College) की स्थापना सन् 1952 में हुई थी, जो स्वतंत्र भारत के प्रारंभिक वर्षों में एक महत्वपूर्ण घटना थी। इस कॉलेज का संस्थापक पंडित नानकचंद, एक दूरदर्शी विद्वान थे, जिनका लक्ष्य था भारतीय ज्ञान परंपरा (विशेषकर संस्कृत ज्ञान) को आधुनिक शिक्षा के साथ समन्वित करना। उनका मानना था कि भारतीय संस्कृति, इतिहास, दर्शन और साहित्य का एक गहरा ज्ञान भी आधुनिक शिक्षा का एक अभिन्न अंग होना चाहिए। NAS कॉलेज प्रमुख रूप से संस्कृत, हिंदी, इतिहास, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, और अन्य मानविकी विषयों में शिक्षा प्रदान करता है। यह कॉलेज भारतीय सांस्कृतिक विरासत और समसामयिक शिक्षा का एक अद्वितीय संयोजन है। पुस्तकालय के संदर्भ में, NAS कॉलेज की अवधारणा को "ज्ञान के एक समग्र केंद्र" के रूप में देखा जा सकता है, जहाँ पुस्तकें, संग्रहालय, और विभिन्न शैक्षणिक संसाधन एक साथ काम करते हैं।

- **पुस्तक संग्रह: विविधता और संगठन**

NAS कॉलेज के पुस्तकालय में लगभग 1,07,000 (एक लाख सात हजार) पुस्तकें हैं। यह संख्या मेरठ कॉलेज से कम है, परंतु यह संग्रह विभिन्न विषयों में गहराई रखता है। संग्रह को कई प्रकार से विभाजित किया जा सकता है जिसमे मुख्य संग्रह

में लगभग 96,433 पुस्तकें हैं, जो कॉलेज के विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रमों से संबंधित हैं। इसके अतिरिक्त, स्व-वित्तपोषित (self-financed) कार्यक्रमों के लिए लगभग 10,000 पुस्तकें हैं। विशेष संग्रह में दुर्लभ पुस्तकें शामिल हैं, जिनमें से लगभग 500 पुस्तकें ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व की हैं। इसके अलावा, समग्र उपचार संग्रह (Comprehensive Collection) में लगभग 1,131 पुस्तकें शामिल हैं। यह विविधता दर्शाती है कि NAS कॉलेज का पुस्तकालय केवल पाठ्यक्रम से संबंधित पुस्तकों तक सीमित नहीं है, बल्कि सामान्य ज्ञान, अनुसंधान, और सांस्कृतिक समृद्धि के लिए भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

- **अनूठी विशेषता: संग्रहालय कोना (Museum Corner)**

NAS कॉलेज के पुस्तकालय की सबसे अनूठी और गौरवान्वित विशेषता है इसका "पुरातत्व और चित्रकला संग्रहालय", जिसे 1991 में स्थापित किया गया था। यह संग्रहालय कोना भारतीय राष्ट्रीय संग्रहालय (National Museum of India) के सहयोग से विकसित किया गया था। यह एक असाधारण पहल थी, क्योंकि यह एक कॉलेज पुस्तकालय को एक संग्रहालय में परिवर्तित करता है। इस संग्रहालय कार्नर में पुरातत्वविद् कलाकृतियाँ, मूर्तियाँ, प्राचीन सिक्के, और चित्रकला के नमूने संग्रहीत हैं। ये वस्तुएँ न केवल मूल्यवान हैं, बल्कि शिक्षार्थियों के लिए एक जीवंत पाठ्यपुस्तक के रूप में कार्य करती हैं। जब एक इतिहास का छात्र किसी मुगल काल की मूर्ति को सीधे देखता है, या किसी प्राचीन सिक्के को स्पर्श करता है, तो उसका ऐतिहासिक ज्ञान केवल किताबों के पन्नों से परे, एक वास्तविक अनुभव में परिणत हो जाता है। यह शिक्षा का एक अधिक प्रभावी रूप है—जहाँ दृश्य (visual), स्पर्शनीय (tactile), और बौद्धिक अनुभव एक साथ काम करते हैं। इस संग्रहालय कोने को संचालित करने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित कर्मचारी हैं, जो छात्रों को कलाकृतियों के बारे में जानकारी देते हैं और उन्हें सही तरीके से संभालने के निर्देश देते हैं। यह सुविधा उत्तर प्रदेश और संपूर्ण भारत में एक अद्वितीय प्रयास माना जाता है।

- **तकनीकी उन्नति और SOUL सॉफ्टवेयर**

NAS कॉलेज का पुस्तकालय भारत में पुस्तकालय प्रबंधन में तकनीकी उन्नति के क्षेत्र में एक अग्रदूत है। यहाँ SOUL (Software for University Libraries) सॉफ्टवेयर का सफलतापूर्वक कार्यान्वयन किया गया है। SOUL सॉफ्टवेयर भारतीय विश्वविद्यालय नेटवर्क (INFLIBNET) द्वारा विकसित किया गया था, और वर्तमान में भारत के लगभग 4,000 से अधिक पुस्तकालयों में इसका उपयोग किया जाता है। SOUL सॉफ्टवेयर की मुख्य विशेषताएँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। सबसे पहले, यह सॉफ्टवेयर UNICODE आधारित है, जिसका अर्थ है कि यह हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत, और अन्य भारतीय भाषाओं में पूरी तरह से समर्थन प्रदान करता है। दूसरा, यह MARC 21 (Machine Readable Cataloging) मानदंड का पालन करता है, जो विश्व भर में पुस्तकालयों द्वारा स्वीकार किया गया है। तीसरा, SOUL में RFID (Radio Frequency Identification) प्रौद्योगिकी का समर्थन है, जिससे पुस्तकों की त्वरित और सटीक ट्रैकिंग संभव होती है। NAS कॉलेज के पुस्तकालय में, जब कोई छात्र या शोधार्थी पुस्तकालय आता है, तो वह पुस्तक को किसी कर्मचारी को देने के बजाय, सीधे एक स्वचालित मशीन के पास जा सकता है, जहाँ पुस्तक का बारकोड स्कैन किया जाता है। SOUL सॉफ्टवेयर तुरंत यह दर्ज कर देता है कि किस छात्र ने किस पुस्तक को कब निकाली है। यह प्रक्रिया न केवल तेजी से होती है, बल्कि त्रुटियों की संभावना भी कम करती है।

- **डिजिटल कैटलॉग और ऑनलाइन सुविधाएँ**

NAS कॉलेज के पुस्तकालय में संपूर्ण वाई-फाई कनेक्टिविटी है, और स्थानीय क्षेत्र नेटवर्क (LAN) सुविधा भी उपलब्ध है। यह मतलब है कि पुस्तकालय के किसी भी कोने में, कोई भी छात्र अपने लैपटॉप या स्मार्टफोन से इंटरनेट से जुड़ सकता है और डिजिटल संसाधनों तक पहुँच सकता है। NAS कॉलेज के पुस्तकालय ने एक व्यापक डिजिटल कैटलॉग बनाया है, जिससे उपयोगकर्ता घर बैठे ही यह देख सकते हैं कि पुस्तकालय में कौन-कौन सी पुस्तकें हैं। यह Online Public Access Catalogue (OPAC) सिस्टम से संचालित

होता है। छात्र अपने खातों को ऑनलाइन देख सकते हैं, देख सकते हैं कि उन्होंने कौन-कौन सी पुस्तकें निकाली हैं, और कब तक उन्हें वापस करनी है।

- **आधुनिकतम चिकित्सा विज्ञान केंद्र : लाला लाजपत राय मेमोरियल मेडिकल कॉलेज पुस्तकालय**

लाला लाजपत राय मेमोरियल (LLRM) मेडिकल कॉलेज की स्थापना सन् 1966 में हुई थी, जो भारतीय स्वतंत्रता के बाद का एक महत्वपूर्ण काल था। इस समय भारत में चिकित्सा शिक्षा को व्यापक स्तर पर विकसित किया जा रहा था, और नए मेडिकल कॉलेजों की स्थापना की जा रही थी। LLRM मेडिकल कॉलेज की स्थापना इसी दृष्टिकोण का एक महत्वपूर्ण कदम था। LLRM मेडिकल कॉलेज का पुस्तकालय, मेरठ कॉलेज और NAS कॉलेज के अन्य दो पुस्तकालयों से पूरी तरह से अलग है। जहाँ मेरठ कॉलेज और NAS कॉलेज सामान्य और कला-आधारित शिक्षा प्रदान करते हैं, वहीं LLRM एक विशिष्ट पेशेवर शिक्षा संस्थान है। यहाँ के छात्र केवल सैद्धांतिक ज्ञान के लिए नहीं, बल्कि व्यावहारिक चिकित्सा कौशल के लिए भी आते हैं। इसलिए, इस पुस्तकालय का डिजाइन और संसाधनों का चयन पूरी तरह से अलग है।

LLRM मेडिकल कॉलेज चिकित्सा विज्ञान के एनेस्थीसिया, कार्डियोलॉजी, सर्जरी, आंतरिक चिकित्सा, बाल रोग, मनोचिकित्सा, और अन्य कई विभिन्न विशेषताओं (specializations) में शिक्षा प्रदान करता है । इसके अलावा, कॉलेज में नर्सिंग और अन्य स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों के लिए भी पाठ्यक्रम हैं। इस विविध शैक्षणिक परिदृश्य में, पुस्तकालय की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

- **विशेषीकृत संग्रह और चिकित्सा केंद्रित संसाधन**

LLRM मेडिकल कॉलेज के पुस्तकालय में लगभग 30,000 से अधिक पुस्तकें हैं, जो पूरी तरह से चिकित्सा विज्ञान से संबंधित हैं। यह संख्या मेरठ कॉलेज और NAS कॉलेज के मुकाबले कम है, परंतु यह एक महत्वपूर्ण बात है कि ये सभी पुस्तकें विशिष्ट चिकित्सा विषयों के लिए चुनी गई हैं। कोई भी पुस्तक यहाँ यूँ ही नहीं रखी जाती है। प्रत्येक पुस्तक एक विशेष उद्देश्य के साथ इस पुस्तकालय का हिस्सा बनती है। यह पुस्तकालय न केवल पुस्तकों पर निर्भर है, बल्कि डिजिटल संसाधनों पर भी अधिक केंद्रित है। यहाँ ई-जर्नल्स (e-journals) की एक विशाल श्रृंखला उपलब्ध है, जो जीव विज्ञान, चिकित्सा, शल्य चिकित्सा, और अन्य संबंधित विषयों पर अनुसंधान प्रकाशन करते हैं। इसके अलावा, यहाँ क्लीनिकल डेटाबेस भी उपलब्ध हैं, जो विशेष रूप से रोग निदान (diagnosis) और उपचार प्रोटोकॉल (treatment protocols) के लिए डिज़ाइन किए गए हैं।

सबसे महत्वपूर्ण डिजिटल संसाधन है PubMed, जो विश्व का सबसे बड़ा चिकित्सा साहित्य डेटाबेस है। PubMed में 30 मिलियन से अधिक चिकित्सा पत्र (medical articles) उपलब्ध हैं। यह सुविधा LLRM के चिकित्सा छात्रों और डॉक्टरों को विश्व भर में हो रहे सबसे हालिया चिकित्सा अनुसंधान तक पहुँचने का मौका देती है। इसके अलावा, यहाँ ClinicalKey और UpToDate जैसे प्रीमियम डेटाबेस भी उपलब्ध हैं। ये डेटाबेस विशेष रूप से क्लीनिकल निर्णय लेने (clinical decision-making) में सहायता के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। एक डॉक्टर जब किसी रोगी का इलाज कर रहा है, तो वह तुरंत इन डेटाबेस में जा सकता है और वह विशेष रोग के बारे में नवीनतम जानकारी प्राप्त कर सकता है।

- **आधुनिकतम बुनियादी ढांचा और अवसंरचना**

हाल ही में, LLRM मेडिकल कॉलेज ने एक बहुत बड़ा और महत्वपूर्ण कदम उठाया है। कॉलेज ने एक नया सुपर स्पेशियलिटी ब्लॉक (super speciality block) और एक नई सेंट्रल लाइब्रेरी (central library) का निर्माण किया है। ये आधुनिक भवन अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी से सुसज्जित हैं। नई सेंट्रल लाइब्रेरी का निर्माण एक ऐसी संरचना के साथ किया गया है, जो न केवल भौतिक पुस्तकों को रखने के लिए उपयुक्त है, बल्कि डिजिटल संसाधनों, शोध केंद्रों, और सेमिनार कक्षों को भी समायोजित करता है। चिकित्सा शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा LLRM मेडिकल कॉलेज के विकास के लिए करोड़ों रुपये का बजट आवंटित किया गया

है। यह भारी निवेश दर्शाता है कि सरकार चिकित्सा शिक्षा को कितना महत्वपूर्ण मानती है, और विशेषकर, चिकित्सा पुस्तकालयों को कितनी प्राथमिकता दी जाती है।

इंटरनेट गति और डिजिटल कनेक्टिविटी की सुविधा में चिकित्सा महाविद्यालयअद्वितीय है। LLRM मेडिकल कॉलेज के पुस्तकालय में 24/7 वाई-फाई सुविधा उपलब्ध है। इसका मतलब यह है कि दिन-रात, किसी भी समय, कोई भी छात्र, डॉक्टर, या शोधार्थी पुस्तकालय में इंटरनेट से जुड़ सकता है। इंटरनेट की गति भी बहुत तेज है, जो बड़ी फाइलों को जल्दी डाउनलोड करने में सक्षम है। पुस्तकालय की डिजिटल प्रणाली पूरी तरह से Online Public Access Catalogue (OPAC) के माध्यम से संचालित होती है। यह एक उन्नत OPAC प्रणाली है, जो वेब-आधारित है, मोबाइल अनुकूलित है, और इसमें डिजिटल संसाधनों के लिए सीधे लिंक हैं। कोई भी उपयोगकर्ता अपने स्मार्टफोन से भी पुस्तकालय के संसाधनों तक पहुँच सकता है।

- **भाषाई पहल और 'हिंग्लिश' में सामग्री**

LLRM मेडिकल कॉलेज ने हाल ही में एक बेहद अभिनव और महत्वपूर्ण पहल की है। कॉलेज ने 'हिंग्लिश' (हिंदी + अंग्रेजी) में चिकित्सा नोट्स और किताबें तैयार करने का निर्णय लिया है। यह एक अद्वितीय पहल है, क्योंकि भारत में अधिकांश मेडिकल कॉलेज अंग्रेजी माध्यम में ही शिक्षा प्रदान करते हैं। 'हिंग्लिश' का अर्थ है एक ऐसी भाषा जिसमें तकनीकी शब्दों के लिए अंग्रेजी का प्रयोग किया जाता है, परंतु व्याख्या और अन्य वर्णनात्मक भाग हिंदी में दिए जाते हैं। उदाहरण के लिए, 'Myocardial Infarction' एक अंग्रेजी शब्द है, परंतु इसकी व्याख्या 'दिल की मांसपेशी में रक्त आपूर्ति में बाधा' के रूप में हिंदी में दी जा सकती है। यह पहल हिंदी-माध्यम के छात्रों के लिए चिकित्सा ज्ञान को अधिक सुलभ बनाती है। यह पहल न केवल LLRM के लिए, बल्कि भारतीय मेडिकल शिक्षा के इतिहास में एक नया अध्याय खोलती है। यह दर्शाता है कि भारतीय भाषाओं में भी उच्च-स्तरीय तकनीकी शिक्षा संभव है।

- **तुलनात्मक विश्लेषण - तीनों पुस्तकालयों की समीक्षा**

विशेषता	मेरठ कॉलेज	NAS कॉलेज	LLRM मेडिकल
स्थापना वर्ष	1892	1952	1966
संस्थाएं की आयु	130+ वर्ष	70+ वर्ष	55+ वर्ष
पुस्तकों की संख्या	2,00,000+	1,07,000	30,000+
संग्रह प्रकार	सामान्य एवं शोध	कला केंद्रित	चिकित्सा विशेषीकृत
दुर्लभ संसाधन	दुर्लभ पाण्डुलिपियां	संग्रहालय कोना (1991)	क्लीनिकल डेटाबेस
पुस्तकालय सॉफ्टवेयर	विकासाधीन	SOUL	OPAC (उन्नत)
नेटवर्क कनेक्टिविटी	सीमित Wi-Fi	संपूर्ण Wi-Fi/LAN	24/7 Wi-Fi
डिजिटलीकरण स्तर	40-50%	70-80%	95%+
वार्षिक बजट स्रोत	UGC	राज्य सरकार	राज्य सरकार का चिकित्सा विभाग
प्रमुख उपयोगकर्ता समूह	सामान्य छात्र, शोधार्थी	कला छात्र, संस्कृति अध्येता	चिकित्सक, संकाय

- **संग्रह का आकार और विविधता**

तीनों पुस्तकालयों के संग्रह के आकार में एक स्पष्ट अंतर दिखाई देता है। मेरठ कॉलेज के पास 2,00,000 से अधिक पुस्तकें हैं, NAS कॉलेज के पास 1,07,000 पुस्तकें हैं, और LLRM मेडिकल कॉलेज के पास 30,000 से अधिक पुस्तकें हैं। यह भिन्नता मुख्य रूप से उन संस्थानों के आकार, संस्थागत उद्देश्यों, और उपलब्ध बजट के कारण है। परंतु संग्रह के

आकार की तुलना करते समय, हमें विविधता और गुणवत्ता को भी ध्यान में रखना चाहिए। मेरठ कॉलेज का संग्रह विविध विषयों को कवर करता है, क्योंकि यह एक बहु-विषयक संस्थान है। NAS कॉलेज का संग्रह कला और मानविकी विषयों पर केंद्रित है, परंतु यह अपने विषयों में गहरा है। LLRM मेडिकल कॉलेज का संग्रह छोटा है, परंतु यह विशिष्ट है—हर पुस्तक चिकित्सा शिक्षा के लिए सावधानीपूर्वक चुनी गई है।

- **तकनीकी विकास की तुलना**

तकनीकी विकास के मामले में, तीनों पुस्तकालयों में एक स्पष्ट श्रेणीकरण दिखाई देता है। मेरठ कॉलेज अभी भी डिजिटल कैटलॉग की प्रक्रिया में है, और इसमें सर्वव्यापी वाई-फाई नहीं है। NAS कॉलेज ने SOUL सॉफ्टवेयर को पूरी तरह से अपना लिया है, और इसमें संपूर्ण वाई-फाई कनेक्टिविटी है। LLRM मेडिकल कॉलेज ने सबसे आधुनिक OPAC प्रणाली लागू की है और 24/7 वाई-फाई उपलब्ध कराया है। चिकित्सा क्षेत्र में तकनीकी उन्नति अधिक गतिशील है, क्योंकि वैश्विक चिकित्सा समुदाय लगातार नई तकनीकों को अपना रहा है। तीसरा, NAS कॉलेज ने SOUL जैसे एकीकृत प्रणाली को अपनाकर एक अच्छी दिशा निर्दिष्ट की है, परंतु मेरठ कॉलेज को अभी भी इस दिशा में अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है।

- **संसाधन प्रबंधन की विभिन्न रणनीतियाँ**

प्रत्येक पुस्तकालय की अपनी अनूठी संसाधन प्रबंधन रणनीति है। मेरठ कॉलेज की रणनीति ***सामान्य और विविध संग्रह विकास*** पर केंद्रित है। यहाँ, यूजीसी अनुदान के माध्यम से दीर्घकालिक और व्यापक संग्रह विकास योजना बनाई जाती है। दुर्लभ पाण्डुलिपियों का संरक्षण एक मुख्य प्राथमिकता है, क्योंकि ये भारतीय सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण अंग हैं।

NAS कॉलेज की रणनीति ***विषय-विशिष्ट गहरे संग्रह और अनुभवात्मक शिक्षा*** का एक संयोजन है। यहाँ, पुस्तकालय और संग्रहालय को एकीकृत किया गया है, जिससे छात्रों को पाठ्यपुस्तकों से परे जाकर ऐतिहासिक और सांस्कृतिक कलाकृतियों के साथ सीधे जुड़ने का अवसर मिलता है।

LLRM मेडिकल कॉलेज की रणनीति ***तुरंत प्रयोज्य ज्ञान (just-in-time knowledge) और वैश्विक अनुसंधान संसाधनों*** पर केंद्रित है। यहाँ, PubMed और अन्य अंतर्राष्ट्रीय डेटाबेस को प्राथमिकता दी जाती है, क्योंकि ये विश्व स्तर के चिकित्सा अनुसंधान तक पहुँच प्रदान करते हैं।

- **बजट और वित्तीय आवंटन की तुलना**

बजट के मामले में, तीनों पुस्तकालयों के वित्तीय स्रोत विभिन्न हैं। मेरठ कॉलेज मुख्य रूप से यूजीसी अनुदान पर निर्भर है, जो शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए आवंटित किया जाता है। NAS कॉलेज को राज्य सरकार और स्व-वित्तपोषण दोनों से निधि मिलता है। LLRM मेडिकल कॉलेज को चिकित्सा शिक्षा विभाग द्वारा बजट आवंटित किया जाता है। इस बजट के अंतर का एक महत्वपूर्ण कारण है—चिकित्सा शिक्षा को तकनीकी रूप से उन्नत और महंगे संसाधनों की आवश्यकता है। इसलिए, सरकार LLRM को अधिक बजट प्रदान करती है। परंतु यह दर्शाता है कि यूजीसी के माध्यम से मेरठ कॉलेज को मिलने वाला बजट सीमित है, जो इसके तकनीकी विकास को धीमा करता है।

- **भविष्य के विकास के लिए व्यापक सुझाव**

मेरठ कॉलेज के पुस्तकालय को भविष्य में अपने विकास के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाने चाहिए। तुरंत कार्य के रूप में, कॉलेज को SOUL सॉफ्टवेयर या किसी समकक्ष एकीकृत पुस्तकालय प्रबंधन प्रणाली को पूरी तरह से लागू करना चाहिए। यह सॉफ्टवेयर पुस्तकालय के संचालन को सुव्यवस्थित करेगा और छात्रों को बेहतर सेवाएँ देना संभव बनाएगा। साथ ही, संपूर्ण कैंपस में वाई-फाई कनेक्टिविटी स्थापित की जानी चाहिए, और बारकोड-आधारित परिसंचरण प्रणाली (barcode-based circulation system) को लागू किया जाना चाहिए। यह प्रणाली पुस्तकों की ट्रैकिंग को स्वचालित करेगी और मानवीय त्रुटियों को कम करेगी। मध्यावधि में, मेरठ कॉलेज को अपनी दुर्लभ पाण्डुलिपियों का डिजिटाइजेशन शुरू करना चाहिए। यह एक दीर्घ प्रक्रिया है, परंतु अत्यंत महत्वपूर्ण है। डिजिटाइजेशन से न केवल ये

पाण्डुलिपियाँ संरक्षित रहेंगी (क्योंकि डिजिटल कॉपी खराब नहीं होगी), बल्कि विश्व भर के शोधार्थियों को भी इन संसाधनों तक पहुँचने का मौका मिलेगा। UGC-INFONET कंसोर्टियम में सदस्यता लेना एक और महत्वपूर्ण कदम है। यह कंसोर्टियम भारतीय विश्वविद्यालयों को अंतर्राष्ट्रीय ई-जर्नल्स और डेटाबेस तक सस्ती दरों पर पहुँच प्रदान करता है। इससे मेरठ कॉलेज के छात्र और शोधार्थी वैश्विक अनुसंधान साहित्य तक पहुँच सकते हैं। छात्रों और संकाय के लिए सूचना साक्षरता कार्यक्रम (information literacy programs) आयोजित करना भी महत्वपूर्ण है। कई बार, छात्र पुस्तकालय में मौजूद संसाधनों का सही तरीके से उपयोग नहीं कर पाते हैं, क्योंकि उन्हें इसकी जानकारी नहीं होती है। नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम इस समस्या को हल कर सकते हैं। दीर्घकालिक दृष्टि से, मेरठ कॉलेज को एक संयुक्त अनुसंधान पोर्टल विकसित करना चाहिए, जहाँ मेरठ शहर के सभी कॉलेजों की अनुसंधान सामग्री एकत्रित हो सके।

इसी प्रकार से ***NAS कॉलेज*** अपने SOUL सॉफ्टवेयर को और भी उन्नत बनाने के लिए प्रयास कर सकता है। SOUL के उन्नत मॉड्यूल्स, जैसे serial control (पत्रिकाओं के लिए) और OPAC 2.0, को पूरी तरह से कार्यान्वित किया जा सकता है। इससे पुस्तकालय की सेवाएँ और भी बेहतर हो सकती हैं। अपने अनूठी विशेषता—संग्रहालय कोने—को और भी मजबूत करने के लिए, NAS कॉलेज डिजिटल संग्रह के साथ इसे एकीकृत कर सकता है। उदाहरण के लिए, संग्रहालय की प्रत्येक कलाकृति को फोटोग्राफ किया जा सकता है, और इसके बारे में विस्तृत जानकारी (metadata) तैयार की जा सकती है। फिर, छात्र वेब के माध्यम से इन कलाकृतियों को देख सकते हैं। NAS कॉलेज को कला छात्रों के लिए विशिष्ट अभिलेख केंद्र (archives center) विकसित करना चाहिए। यहाँ, कॉलेज के इतिहास से संबंधित दस्तावेज, तस्वीरें, और अन्य महत्वपूर्ण सामग्री संग्रहीत की जा सकती है। मौखिक इतिहास (oral history) परियोजना शुरू करना एक और अभिनव विचार है। इसमें, कॉलेज के पूर्व छात्र, शिक्षक, और अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों के साथ साक्षात्कार रिकॉर्ड किए जा सकते हैं, जिससे कॉलेज के इतिहास को संरक्षित किया जा सके। राष्ट्रीय संग्रहालय के साथ अपनी गहन साझेदारी को बढ़ाने से, NAS कॉलेज अधिक मूल्यवान कलाकृतियों को प्राप्त कर सकता है, और अपने छात्रों को राष्ट्रीय स्तर की संस्कृति शिक्षा प्रदान कर सकता है।

LLRM मेडिकल कॉलेज अपनी वर्तमान सेवाओं को और भी मजबूत करने के लिए, PubMed Central और अन्य ओपन-एक्सेस डेटाबेस का अधिकतम लाभ उठा सकता है। साथ ही, संकाय और छात्रों के लिए नियमित रूप से डेटाबेस साक्षरता कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं। 'हिंग्लिश' पहल को और विस्तारित करने के लिए, LLRM प्रमुख क्लीनिकल प्रोटोकॉल को हिंदी में भी उपलब्ध कराने पर विचार कर सकता है। साथ ही, चिकित्सा शब्दावली की एक व्यापक हिंदी व्याख्या तैयार की जा सकती है, जो हिंदी-माध्यम के छात्रों के लिए बहुत उपयोगी होगी। शोध प्रबंधन प्रणाली (Research Management System) को OPAC से एकीकृत करना एक और महत्वपूर्ण कदम हो सकता है। साथ ही, एक संस्थागत भंडार (institutional repository) बनाया जा सकता है, जहाँ LLRM के डॉक्टर अपने शोध प्रकाशन जमा कर सकते हैं। यह दीर्घकालिक संरक्षण और विश्वव्यापी प्रचार दोनों सुनिश्चित करेगा।

सुझावो के स्तर पर ***तीनों संस्थानों के लिए सामान्य सुझाव*** भी दिया जा सकता है। यथा , तीनों संस्थानों को मिलकर एक ***मेरठ पुस्तकालय नेटवर्क (Meerut Library Consortium)*** गठित करना चाहिए। यह नेटवर्क निम्नलिखित लाभ प्रदान कर सकता है:

1. पहला, संसाधन साझाकरण (resource sharing)—यदि किसी पुस्तक की आवश्यकता एक कॉलेज के छात्र को है, परंतु वह पुस्तक उसके कॉलेज के पुस्तकालय में नहीं है, तो वह अन्य कॉलेज के पुस्तकालय से माँग सकता है।
2. दूसरा, अंतर्विभागीय ऋण (interlibrary loan) व्यवस्था को सुसंगत बनाना—एक मानकीकृत प्रक्रिया विकसित करना, जिससे पुस्तकों को आसानी से एक पुस्तकालय से दूसरे में भेजा जा सके।

3. तीसरा, संयुक्त डेटाबेस परामर्श केंद्र स्थापित करना—एक ऐसा केंद्र, जहाँ तीनों पुस्तकालयों के संसाधनों के संबंध में व्यक्तिगत परामर्श दिया जा सके।

इसी प्रकार ***उपयोगकर्ता शिक्षा और सूचना साक्षरता*** भी महत्वपूर्ण है। सभी तीनों संस्थानों को:

1. छात्रों के लिए पुस्तकालय अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए।
2. संकाय के लिए उन्नत खोज तकनीकें सिखानी चाहिए।
3. डिजिटल संसाधनों का प्रभावी उपयोग प्रशिक्षण देना चाहिए।

डिजिटल संरक्षण और दीर्घकालिक संरक्षण भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। विरासत दस्तावेजों (heritage documents) की डिजिटल कॉपी बनाई जानी चाहिए, क्लाउड-आधारित बैकअप प्रणाली अपनाई जानी चाहिए, और पुरानी पुस्तकों के संरक्षण के लिए पेशेवर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। भारत के बहुभाषी संदर्भ में, सभी तीनों पुस्तकालयों को अंग्रेजी, हिंदी, और संस्कृत में मुख्य संसाधन विकसित करने पर विचार करना चाहिए। छात्रों को उनकी पसंद की भाषा में सेवाएँ प्रदान करना एक प्रगतिशील दृष्टिकोण है।

- **निष्कर्ष**

मेरठ के इन तीनों पुस्तकालयों का विस्तृत अध्ययन हमें भारतीय उच्च शिक्षा के बहुआयामी दृष्टिकोण से परिचय कराता है। प्रत्येक पुस्तकालय, अपने संस्थान की विशिष्ट भूमिका के अनुसार, एक अलग मार्ग अपनाता है। मेरठ कॉलेज का पुस्तकालय **परंपरा और विविधता** का प्रतीक है। NAS कॉलेज का पुस्तकालय **सांस्कृतिक ज्ञान का एक जीवंत केंद्र** है। LLRM मेडिकल कॉलेज का पुस्तकालय **आधुनिक तकनीक और व्यावहारिक ज्ञान का संयोजन** है। परंतु, भविष्य की ओर देखते हुए, हमें यह समझना होगा कि ये तीनों पुस्तकालय एक व्यापक शैक्षणिक पारिस्थितिकी (educational ecosystem) का हिस्सा हैं। डिजिटल युग में, जहाँ जानकारी तेजी से फैल रही है, और नई तकनीकें लगातार विकसित हो रही हैं, इन पुस्तकालयों को न केवल अपनी परंपरागत भूमिका को बनाए रखना चाहिए, बल्कि नई और गतिशील भूमिकाओं को भी अपनाना चाहिए। भविष्य में, ये पुस्तकालय एक-दूसरे के साथ अधिक सहयोग कर सकते हैं। संसाधनों को साझा करना, प्रौद्योगिकी में निवेश करना, और उपयोगकर्ताओं को बेहतर सेवाएँ प्रदान करना—ये सभी कदम मेरठ को भारत के एक प्रमुख शैक्षणिक केंद्र के रूप में स्थापित कर सकते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इन पुस्तकालयों को अपने मूल उद्देश्य को कभी नहीं भूलना चाहिए—ज्ञान का प्रसार करना, विद्यार्थियों और शोधार्थियों को सहायता प्रदान करना, और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित रखना। डिजिटल युग में भी, यह उद्देश्य अपरिवर्तित रहता है। मेरठ के ये तीनों पुस्तकालय न केवल अपने संस्थानों के लिए, बल्कि पूरे मेरठ शहर के लिए, और वास्तव में, पूरे भारतीय शिक्षा जगत के लिए प्रकाशस्तंभ (lighthouses) हैं। वे दिखाते हैं कि कैसे परंपरा और आधुनिकता को एक साथ चलाया जा सकता है, कैसे विविध संसाधनों को प्रबंधित किया जा सकता है, और कैसे लक्षित दर्शकों को विशेष सेवाएँ प्रदान की जा सकती हैं। अंततः, जैसा कि भारतीय दार्शनिक परंपरा में कहा गया है, "आचार्य हो सकता है, पर ज्ञान का स्रोत पुस्तकालय है।" इन पुस्तकालयों के माध्यम से, मेरठ शहर के हजारों छात्र, शोधार्थी, और ज्ञान के साधक अपनी बौद्धिक यात्रा जारी रख सकते हैं, और समाज के विकास में अपना योगदान दे सकते हैं।

संदर्भ सूची

- **आमिर, हसन, एवं अन्य,** *"Evaluation of Information Services in Medical College Libraries of Uttar Pradesh."जर्नल ऑफ हेल्थ इंफॉर्मेशन,* वॉल्यूम *14,* संख्या *3, 2022,* पृष्ठ *112-28*।
- **अहमद, हसन, और सबा आई. बख्शी,** *"Library Automation Software Packages: A Comparative Study." इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लाइब्रेरी एंड इंफॉर्मेशन साइंस,* वॉल्यूम *10,* संख्या *2, 2021,* पृष्ठ *45-62*।
- **ऑल इंडिया काउंसिल फॉर टेक्निकल एजुकेशन (*AICTE*),** *Norms and Standards for Technical*

Institutions: Library Resources, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, *2020*।

- **चतुर्वेदी, राजेश,** *Digital Preservation of Indian Manuscripts: Challenges and Prospects* भारती पब्लिकेशंस, *2019*।
- **धीमान, अमित कुमार,** *Collection Development and Access Management in Academic Libraries: From Print to E-resources,* इन्फ्लिबनेट केंद्र प्रकाशन, *2018*।
- **गुप्ता, मीरा,** *"Library Consortia in India: An Overview of E-ShodhSindhu" डेसीडॉक जर्नल ऑफ लाइब्रेरी एंड इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी,* वॉल्यूम *39,* संख्या *1, 2019,* पृष्ठ *15-22*।
- **इन्फ्लिबनेट केंद्र,** *SOUL 3.0: User Manual for Integrated Library Management Software,* सूचना और पुस्तकालय नेटवर्क केंद्र, *2021*।
- **जैन, अशोक कुमार।**, *Conservation and Management of Rare Collections in North Indian Libraries", हेरिटेज एंड कल्चर रिव्यू,* वॉल्यूम *8,* संख्या *4, 2020,* पृष्ठ *201-15*।
- **कपूर, विजय, और अनीता पटेल,** *User Satisfaction with Digital Library Services: A Study of Medical Professionals, मेडिकल लाइब्रेरी रिव्यू,* वॉल्यूम *12,* संख्या *2, 2023,* पृष्ठ *88-102*।
- **मेरठ कॉलेज।** *पुस्तकालय सेवाएं और संसाधन*। केंद्रीय पुस्तकालय, मेरठ कॉलेज,
- **मिश्रा, प्रदीप,** *User Education in Academic Libraries: Planning and Implementation,* एस एस पब्लिकेशंस, *2017*।
- **नानकचंद एंग्लो संस्कृत कॉलेज (*NAS*),** *सेल्फ स्टडी रिपोर्ट (SSR): मानदंड IV - बुनियादी ढांचा और शिक्षण संसाधन, NAS* कॉलेज, मेरठ, *2022*।
- **पटेल, रवि,** *E-Resources and their Impact on Health Science Education, इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल इंफॉर्मेटिक्स,* वॉल्यूम *11,* संख्या *1, 2021,* पृष्ठ *30-45*।
- **शर्मा, नेहा,** *Implementation of SOUL Software in Degree College Libraries: A Case Study of Meerut District, लाइब्रेरी प्रोग्रेस (इंटरनेशनल),* वॉल्यूम *41,* संख्या *1, 2021,* पृष्ठ *55-68*।
- **सिंह, अरुण,** *उत्तर प्रदेश में शैक्षणिक पुस्तकालयों का आधुनिकीकरण,* एकैडमिक प्रेस, *2019*।
- **सिंह, राजेश, और मीरा कपूर।** "कॉलेज पुस्तकालयों के बीच संसाधन साझाकरण नेटवर्क: क्षेत्रीय सहयोग के लिए एक मॉडल।" *जर्नल ऑफ लाइब्रेरी मैनेजमेंट,* वॉल्यूम *15,* संख्या *3, 2020,* पृष्ठ *140-55*।
- **यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन (*UGC*),** *उच्च शिक्षण संस्थानों के लिए पुस्तकालय मानकों पर यूजीसी दिशानिर्देश,* शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, *2015*।
- **यादव, संजय,** *Rare Manuscripts and Archives: A Management Handbook,* हेरिटेज पब्लिशर्स, *2018*।